‘‘मारवाड़ महाराजा मानसिंह कालीन [19वीं शताब्दी] नाथ संप्रदाय विषयक हस्तलिखित चित्रित ग्रंथों का अनुशीलन ’’

***डॉ. नम्रता स्वर्णकार**

जोधपुर मारवाड़ के शासक राजा मान सिंह जिनका शासनकाल सन 1803 - 1843 ईस्वी रहा है I इनका समय नाथ संप्रदाय के विकास का स्वर्ण काल माना जाता है I स्वयं महाराजा नाथ संप्रदाय के परम अनुयाई रहे हैं I[1] महाराजा मानसिंह के गुरु नाथपंथी आयस देवनाथ थे Iआयस देवनाथ की भविष्यवाणी से महाराजा मानसिंह को मारवाड़ का राज्य मिला था I शासक बनने पर महाराजा मानसिंह ने मारवाड़ क्षेत्र में अनेक नाथ मंदिरों व मठों का निर्माण करवाया , जिनमें महामंदिर और उदय मंदिर मारवाड़ के प्रमुख नाथ मंदिर हैं I तत्कालीन मंदिरों का उल्लेख विभिन्न ग्रंथों में मिलता है I

महाराजा मानसिंह जी ने जोधपुर मेहरानगढ़ दुर्ग में 2 जनवरी 1805 ईस्वी में पुस्तक प्रकाश की स्थापना की जो कि वर्तमान में महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केंद्र के रूप में जाना जाता है I जहां नाथ साहित्य का विशाल संग्रह है I[2]

स्वयं महाराजा उच्च कोटि के विद्वान थे उन्होंने छोटे-बड़े कई ग्रंथों की रचना की है I वर्तमान में सभी महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश में संग्रहित है I महाराजा मानसिंह के 40 वर्ष के शासनकाल में मारवाड़ में साहित्य, चित्र कला ,संगीत कला और धर्म के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ वस्तुतः महाराजा मानसिंह जी का काल नाथ संप्रदाय के सर्वांगीण विकास का काल रहा है I

वर्तमान में यह कलासंपदा महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केंद्र मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट एवं उम्मेद भवन पैलेस जोधपुर में संग्रहित है I इसके साथ-साथ कुछ प्रमुख नाथ मठों जैसे पलासनी [जोधपुर - मारवाड़] , सिरे मंदिर- जालौर आदि में संग्रहीत हैं I

महाराजा मानसिंह कालीन नाथ संप्रदाय विषयक लघु ग्रंथ चित्रों को उनके विषय के आधार पर निम्न रूप से विभाजित कर सकते हैं -

1. **नाथ योगियों की साधना पद्धति से संबंधित चित्र**
2. **नाथों के राजपरिवार से भेंट के दृश्य**
3. **तंत्र मंत्र से संबंधित चित्र**

4. **योगासन से संबंधित चित्र**
5. **ग्रंथों में साज-सज्जा व अलंकरण**
6. **अन्य - विविध विषय**

1. नाथ योगियों की साधना पद्धति से संबंधित चित्र :-

महाराजा मानसिंह के समय नाथ योगियों की साधना पद्धति से संबंधित सर्वाधिक लघु चित्र बनाए गए जिनमें नाथ चरित्र की कथा , नाथ पुराण और सिद्ध सिद्धांत पद्धति पर आधारित चित्र बने हैं I 'नाथ पुराण' और 'नाथ चरित्र 'की कथा दोनों ग्रंथों में नाथो की उत्पत्ति , उद्भव एवं उनकी महिमा से संबंध रखने वाली घटनाओं का वर्णन है I[3] **चित्र संख्या - [1]**

चित्र संख्या 1 जालंधर नाथ जी से नाथो की उत्पत्ति - नाथ पुराण , चित्र सौजन्य -मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर

'नाथ चरित्र' नामक ग्रंथ महाराजा मानसिंह के समय संकलित किया गया था परंतु किसी अज्ञात कारण से यह पूरा न हो सका I राजकीय पुस्तक प्रकाश में इस विषय के तीन मुख्य ग्रंथ विद्यमान है- नाथ चरित्र , नाथ पुराण और मेघमाला इनमें पहला मारवाड़ी भाषा में गद्य में है , दूसरा भी उसी भाषा में है परंतु इसमें गद्य और पद्य दोनों का समावेश है , तीसरा संस्कृत में पद्य में है I[4]

पंडित विश्वेश्वर नाथ रेउ जी लिखते हैं कि इन ग्रंथों के करीब 25 चित्रों पर नंबर लगे हैं और पहले चित्रों के पीछे चित्रित कथाओं का विवरण भी दिया गया है जिन पर नंबर नहीं लिखे थे उन पर नंबर लगाने के स्थान बने हैं, अतः इन चित्रों को उनकी कथा से साम्यता देखते हुए रेउ जी ने इनका विवरण तैयार किया है I

इस प्रकार नाथ पुराण के 28 और नाथ चरित्र के 71 इस प्रकार यह कुल 99 चित्र महाराजा मानसिंह जी के समय बने होने से करीब 100 वर्ष पूर्व [रेउ जी द्वारा विवरण तैयार करने के 100 वर्ष पूर्व] वर्तमान लगभग 200 वर्ष पूर्व की राजपूताने की चित्रकला के सुंदर नमूने हैं I यह देसी कागज की जिन दफ्तीयों पर बने हैं , उनकी लंबाई 4 फीट 2 इंच , चौड़ाई 1 फीट 6.5 इंच और मोटाई 2 /1. 8 इंच के करीब है I

इसी प्रकार सिद्ध सिद्धांत पद्धति से संबंधित 25 चित्र मारवाड़ नरेश महाराजा मान सिंह जी के राज्य काल में विक्रम संवत 1881 ही में बनवाए गए थे I सिद्ध सिद्धांत पद्धती योग से संबंध रखने वाला गोरखनाथ द्वारा रचित संस्कृत ग्रंथ है , जिसमें 6 अध्याय हैं , जिन्हें 6 उपदेश भी कहा गया है[5] I **चित्र संख्या - [दो]**

यह उपदेश इस प्रकार है :-

1. **पिंड उत्पत्ति**
2. **पिंड विचार ,**
3. **पिंड संवित्ती**
4. **पिंडाधार**
5. **पिंड पद समरस भाव - करण**
6. **नित्यपिंडा अवधूत [योगी लक्षण]**

चित्र संख्या-2 , पिंड में 9 चक्रों का स्वरूप, सिद्ध सिद्धांत पद्धती , चित्र सौजन्य - मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट ,जोधपुर

यह चित्र देसी कागज की बनी करीब 4 फीट लंबी ,डेढ़ फीट चौड़ी और 1 /30 इंच मोटी दफ्ती पर बने हैं, और आज से करीब 110 वर्ष पूर्व [रेउ जी द्वारा विवरण तैयार करने के 110 वर्ष पूर्व एवं वर्तमान करीब 210 वर्ष पूर्व] की राजपूत कलम के उत्तम उदाहरण हैं I इनके चारों तरफ करीब आधा इंच का हाशिया बना है, इसके बीच में पीले और ऊपर नीचे लाल रंग की धारियां बनी है I यह सब चित्र मारवाड़ शैली के अत्यंत सुंदर उदाहरण है I

2. नाथ गुरुओं के राजपरिवार से भेंट के दृश्य

महाराजा मानसिंह जी के विभिन्न अवसरों पर यथा- पूजा ,उत्सव आदि पर नाथ गुरु एवं महा सिद्ध जालंधर नाथ जी के साथ भेंट करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने एवं दर्शन करने के अनेकों चित्रों का निर्माण इस समय किया गया I यह महाराजा मानसिंह कालीन चित्रों का मुख्य विषय भी रहा है I

इस विषय के अनेक चित्र प्राप्त होते हैं, जिसमें सन 1835 में इस काल के एक चित्रकार शिवदास भाटी द्वारा बनाया एक चित्र जिसमें जालंधर नाथ जी द्वारा महाराजा मानसिंह को दिवाली की रात दुपट्टा / पटका पहनाकर स्वागत करते चित्रित किया गया हैI यह चित्र महाराजा मानसिंह जी की नाथ संप्रदाय में अति श्रद्धा व विश्वास को दर्शाता है I इस प्रकार के अनेकों चित्र महाराजा मानसिंह

काल में बनाए गए जिनमें महाराजा मान सिंह जी को जालंधर नाथ जी एवं अपने गुरु आयुष देव नाथ जी के आगे प्रणाम की मुद्रा, चरण वंदना एवं पूजा अर्चना करते हुए चित्रित किया गया है I

इसी समय के एक चित्र में महाराजा मानसिंह जालंधर नाथ जी के आगे प्रणाम की मुद्रा में चित्रित किए हैं जिसमें नाथ जी को मध्य में ऊंचे स्वर्ण आसन पर बैठे बनाया गया है , संभवतः यह महा मंदिर में स्थापित नाथ जी का आसन व मूर्ति की प्रेरणा के आधार पर चित्रित किया है एवं सामने दाई और महाराजा मानसिंह एवं जालंधर नाथ जी के पीछे आयस देव नाथ जी को भी महाराजा मानसिंह के समान सफेद पोशाक[जामा चूड़ीदार] पहने चित्रित किया है I दोनों की पगड़ी अलग-अलग बनाई गई है I आयस देवनाथ को बड़े कर**ण** कुंडल व हाथ में दो दंड पकड़े चित्रित किया गया है I दोनों खड़ी आकृतियों से चित्र संयोजन अत्यधिक सुंदर वन पड़ा है I चित्र में चटक रंग योजना प्रयुक्त की गई है I जिसमें गहरा नीला , हरा , लाल व सुनहरा [स्वर्ण] रंग , गुलाबी रंग मुख्यतः प्रयोग किए गए हैं I आकाश में सर्पाकार लहरदार मेघमाला लाल व सफेद रंग से बनाई गई है तथा पार्श्व में वृक्षों पर मयूर बैठे हैं जो कि , वर्षा काल के समय का दृश्य चित्रित करने में चित्रकार ने पूर्ण सफलता प्राप्त की है I वस्तुतः महाराजा मानसिंह जी की नाथ संप्रदाय के प्रति श्रद्धा के चरम को दर्शाया गया है कि महाराजा ने वर्षा काल में भी अपने गुरु के दर्शन के लिए आना स्थगित नहीं किया I **चित्र संख्या - [3]**

चित्र संख्या - 3 , महाराजा मानसिंह अपने गुरु और लादू नाथ जी के सामने हाथ जोड़े प्रणाम की मुद्रा में 19वीं शताब्दी, चित्रकार -रासो द्वारा चित्रित ,संग्रहित मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट , जोधपुर

3. तंत्र मंत्र से संबंधित चित्र

नाथ संप्रदाय में कई ग्रंथ तंत्र से संबंधित है I जिनमें मच्छिंद्रनाथ द्वारा रचित कॉल ज्ञान निर्णय, कॉलवीर तंत्र [ए - बी],कुलानंद आदि है I मच्छिंद्रनाथ ने कोल आचार्य साधना की और बाद में कुल मार्ग मार्ग में सनिष्ठ हो गए I इसी प्रकार जालंधर नाथ जी ने भी है ब्रज के साधना गत सिद्ध कापालिक मार्ग से प्रभावित रहे तथा बाद में नाथ मत [शुद्ध मत] का वरण कर लिया I[6]

योग का संबंध भी तंत्र और मंत्र से जुड़ा है गोरक्षनाथ हठयोग साधना के मुख्य प्रवर्तक थे I अथवा गोरक्षनाथ की साधना को हठयोग साधना भी कहा गया है I

हठयोग में दो बीज मंत्रों का सहयोग है जिनमें ह प्राण को दर्शाता है तथा था बुद्धि और यह दोनों मिलकर शक्ति में परिणत होते हैं और परम पद अथवा अपने मूल से जुड़ जाते हैं I[7] ब्रिक्स का मत है कि 12 वीं शताब्दी के गोरक्ष रचित ' गौरक्ष ' के उपदेशों में योग और तंत्र का मिश्रण है I[8]

अतः नाथ संप्रदाय में योग, तंत्र, मंत्र, यंत्र का संयोग है I मारवाड़ में महाराजा मानसिंह के काल में नाथ संप्रदाय विषयक तंत्र, मंत्र से जुड़े चित्रों का निर्माण भी किया गया, जिसका प्रमुख कारण यह भी था कि महाराजा मानसिंह के आराध्य जालंधर नाथ जी थे और जालंधर नाथ जी की साधना सिद्ध कापालिक मार्ग जो कि तंत्र - मंत्र व कर्मकांडी से प्रभावित भी रही थी , एवं बौद्ध वज्रयान या अन्य कापालिक मतों का प्रभाव भी रहा है I

महाराजा मानसिंह कालीन नाथ संप्रदाय के तंत्र मंत्र के चित्र मुख्यता बड़े छोटे कागज वह कपड़े पर बनाए गए हैं यह सभी महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश में संग्रहीत हैं इन चित्रों में प्रमुख नाथ मंडल पूजा चक्र, नाथ जी के तीन यंत्र, कर्म विपाक यंत्र, ज्ञान चौपड़ व कई फुटकर यंत्र भी बनाए गए , जिनमें मराठी लिपि युक्त चित्र, विक्रम राज- नक्षत्र ग्रह दृष्टि, पृथ्वी चित्र एवं नाथ जी के दोहे तथा देवीयंत्र के चित्र भी मिलते हैं I **चित्र संख्या [4]**

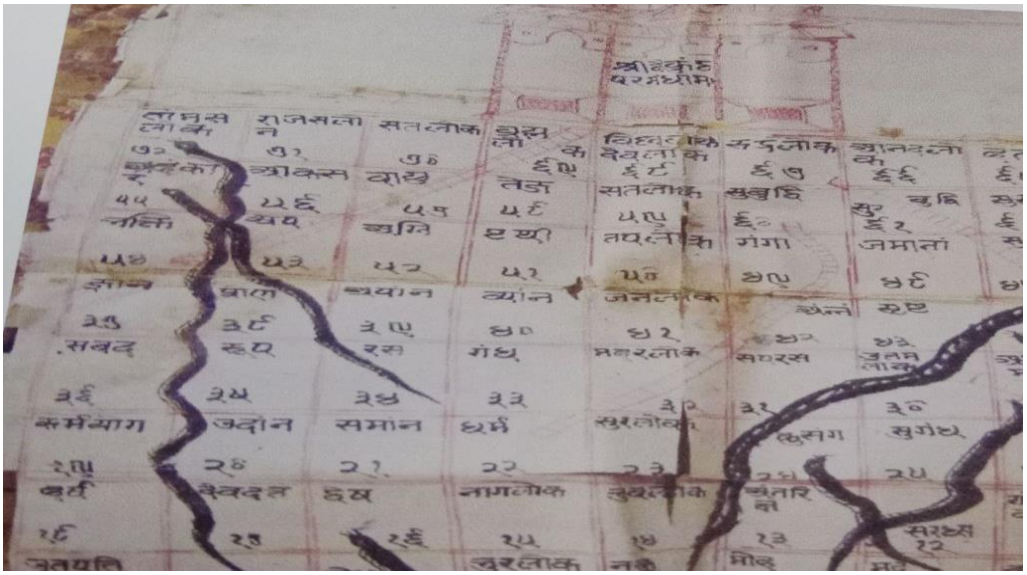

चित्र संख्या - 4 , ज्ञान चौपड़, 19वीं शताब्दी, संग्रहित महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश केंद्र, मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर

4. योगासन से संबंधित चित्र:-

लघु चित्रों में नाथ योगियों के विभिन्न प्रकार के योगासन के चित्र भी बनाए गए I योगासन से संबंधित कई क्षेत्र महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश जोधपुर में संग्रहित हैं I जिनमें एक चित्र जो कि लगभग 18 /22 इंच के बड़े कागज [वसली] पर बनाया गया है I इसे 10 भागों में विभाजित किया गया है , प्रथम तल , द्वितीय व तृतीय तल में क्रमशः 4 व 3 ,3 बड़े भागों में नवनाथ को अलग-अलग प्रकार की योग मुद्राओं को करते हुए चित्रित किया गया है तथा मध्य भाग में महाराजा मानसिंह जी को जालंधर नाथ जी के सामने हाथ जोड़े प्रणाम की मुद्रा में बैठे हुए बनाया है I सभी में आठ नाथ योगियों को कोपिन धारण किए तथा एक योगी को पूरे वस्त्र पहने चित्रित किया गया है I संभवत: यह एक स्त्रीयोगिन को बनाया है I इस प्रकार का स्त्री योगीन का भित्ति चित्र उदय मंदिर नाथ आसन ,जोधपुर में भी योगासन करते चित्रित किया गया है I

सभी नाथ योगियों के एक हाथ में रुद्राक्ष की माला व कानों में कुंडल पहने खुली जटाओं वाला एवं एक ही वर्ण - नीले रंग में चित्रित किया है I सभी योगियों को **बाघबर पर आसन** अस्त दिखाया है I किंतु एक नाथ योगी को खड़े रूप में साधना करते हुए चित्रित किया है I जिनके 4 तरफ अग्नि जलते हुए बनाई हैं I सभी योगियों के पीछे तेज पुंज निर्मित किया है I

पूरे चित्र में विशेष बात यह है कि चित्र के 10 विभाजन होने के बाद भी संयोजन एकरूपता लिए हैं I क्योंकि सभी में नीला आकाश पार्श्व में सफेद पहाड़ियां व आच्छादित हरियाली एवं अग्रभाग में सपाट हरि समतल भूमि तथा नीचे की तरफ आगे धूम्रवर्ण [सलेटी रंग] की नदी को चित्रित किया है I **चित्र संख्या - [5]**

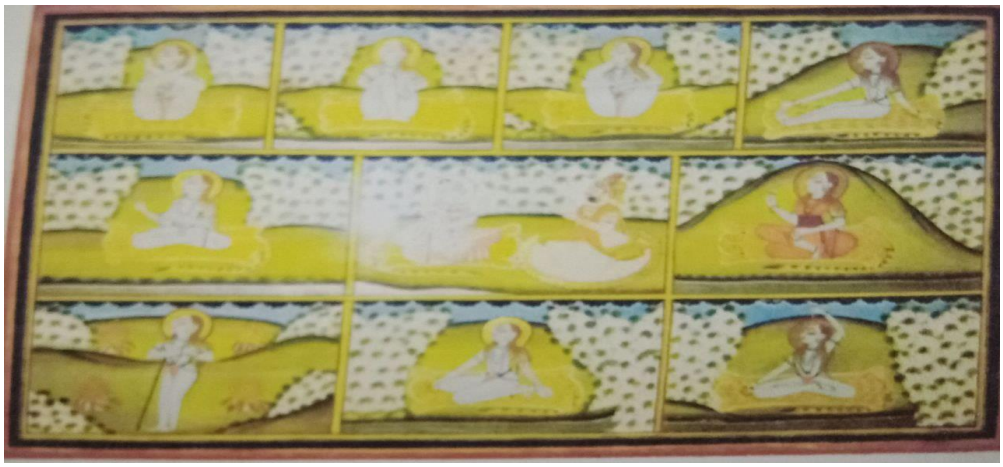

चित्र संख्या - 5, नाथ योगियों की विभिन्न योग मुद्राएं, चित्र सौजन्य - मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर

प्रकार महाराजा मानसिंह कालीन नाथ संप्रदाय के योगासन से संबंधित कई लघु चित्र प्राप्त होते हैं जिनमें नाथ योगियों को अलग-अलग प्रकार की योग मुद्राएं करते हुए बनाया गया हैI

5. ग्रंथ चित्रों में साज-सज्जा व अलंकरण -

महाराजा मानसिंह कॉलेज कालीन हस्तलिखित ग्रंथों में चित्र के साथ साथ ग्रंथों की लिखावट साज-सज्जा व अलंकरण ने भी कलात्मक सौंदर्य की अभिवृद्धि की है I

ग्रंथों में लिखावट के लिए मुख्यतः काले व लाल रंग को प्रयुक्त किया गया है I साथ ही बॉर्डर बनाने में पीला , हरा व सोने के रंग का प्रयोग किया गया है I ग्रंथ के बाहरी पृष्ठ , ऊपरी पृष्ठ मध्य पृष्ठ और अंतिम पृष्ठ में आवश्यकता अनुसार पीले रंग करके लाल रंग के सुंदर हाशिए बनाए गए हैं I कहीं-कहीं प्रत्येक पृष्ठ के पृष्ठ संख्या को अलंकृत किया गया है I जिसमें महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश में संग्रहित गोरक्ष सहस्त्रनाम ग्रंथ , नाथ विषयक संग्रह , कृष्ण दास कृत- गोरक्षनाथ चरित्र , योग सिद्धांत सार और ज्ञान दास कृत - हठ प्रदीपिका भाषा टीका , योग बंद-1 , साथ ही कई काव्य गुटका और साहित्य गुटका ग्रंथ के भी सुंदर हाशिया बनाकर और बीच-बीच में सजावट करके उनके कलात्मक सौंदर्य को बढ़ा दिया है I **चित्र संख्या है - [6]**

चित्र संख्या - 6 , -कृष्ण दास कृत गोरक्षनाथ चरित - योग बंद -1, ग्रंथ -19 ,संग्रहित महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश केंद्र , जोधपुर

6. अन्य विविध विषय

महाराजा मानसिंह कालीन नाथ संप्रदाय विषयक चित्रित ग्रंथों में कई स्वतंत्र विषयों अथवा फुटकर चित्रों का निर्माण भी किया गया I जिसमें नाथ गुरुओं एवं महाराजा मान सिंह जी के साथ साथ अन्य प्रमुख व्यक्तियों व पशु-पक्षियों को भी प्रमुखता से बनाया गया I इसी क्रम में एक प्रयोग कलाकारों द्वारा और किया गया जिसके अंतर्गत जो ग्रंथ संकलन में अधूरे रह जाते अथवा जिनमें पृष्ठ संख्या ज्यादा होती वहां पीछे के पृष्ठों पर पेंसिल व स्याही के विभिन्न रेखांकन किए गए हैं , जिनमें स्त्री-पुरुष, घोड़े, ऊंट, हाथी आदि के सुंदर सूक्ष्म रेखांकन ग्रंथ को पूर्ण करते हैं I ऐसे कई ग्रंथ महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश केंद्र - जोधपुर में संग्रहीत हैं I

मारवाड़ महाराजा मानसिंह जी के अनन्य श्रद्धा नाथ संप्रदाय के प्रति अटूट थी और इसके उदाहरण हमें तत्कालीन कलासंपदाओं से ज्ञात होती है I जोधपुर महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश केंद्र मैं असंख्य हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है, जो कि मारवाड़ लघु चित्रकला का स्वर्ण काल 19वीं शताब्दी का यह महाराजा मानसिंह जी का काल अत्यंत उल्लेखनीय है I

उपसंहार :

किसी भी देश राज्य की सांस्कृतिक विशेषताओं में कला व धर्म अपना विशेष स्थान रखते हैं I आदि काल से कलाएं धर्म की संवाहक एवं पोषक रही है I कलाएं अभिव्यक्ति का परिष्कृत स्वरूप है I यह अभिव्यक्ति व्यक्तिगत, वस्तुगत , विषयगत एवं धार्मिकता की विशेषताओं के विभिन्न रूपों

को प्रकट करती रही है I इसी का एक स्वरूप हमें नाथ संप्रदाय विषयक इन लघु चित्रों में दिखाई देता है , जो कि कलाकारों द्वारा संप्रदाय गत आस्था के स्वरूप की कलात्मक प्रस्तुति है जिसमें प्रत्येक रेखा , रंग व आकार का अपना विशिष्ट लौकिक एवं अलौकिक महत्व तथा दृष्टिकोण है I वर्तमान में अनेकों विद्वानों ने इन लघु चित्रों पर अपनी विशद व्याख्या प्रस्तुत की है I नाथ संप्रदाय के यह लघु चित्र मारवाड़ कला के सौंदर्य मूलक कलात्मक स्वरूप को समझने में सहायक है I

***सहायक आचार्य**
ललित कला विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर

संदर्भग्रंथ सूची :–

1. डॉ. नारायण सिंह भाटी (सं.) महाराजा मनसिंह दी मिस्टीक मोनार्क ऑफ मारवाड़, पृ. – 39।
2. (i) डॉ. रामप्रसाद दाधीच – महाराजा मानसिंह जोधपुर – व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ. 32
   (ii) डा. पद्मजा शर्मा : जोधपुर के महाराज मानसिंह और उनका कार्य, पृ.243
3. (i) डॉ. जहूर खां मेहर, डॉ. महेन्द्र सिंह नगर, जोधपुर का ऐतिहासिक दुर्ग मेहरनागढ़, पृ. 99
   (ii) डा. महेन्द्रसिंह नगर (सं.) – 1 रसीलेराज, पृ. 42
4. पं. विश्वश्वेर नाथ रेउ : नाथ चरित्र और नाथ पुराणा कथा और उस पर आधारित चित्रों का विवरण – पृ. 77–78
5. पं. विश्वश्वेर नाथ रेउ : सिद्ध – सिद्धान्त पद्धति और उसके आधार पर बने चित्रों का विवरण पृ. (1–7)
6. डॉ. हजारी प्रसार द्विवेदी – ग्रंथावली–6, नाथ सम्प्रदाय, पृ. – 53
7. डॉ. आर.एस. बृजपाल – दी स्पलैण्डर एण्ड डाइमेन्शनस् ऑफ योगा, वॉल्यमू–I, पृ. – 5
8. बिग्स : गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगीज, पृ. 257–327